

प्रथम संस्करण / अन्तुबर 2008 क्रांतिक 1930

पंचर्मद्रण : दिसंबर 2009 प्रैप 1031

© राष्ट्रीय क्षेत्रिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSV

पुस्तकथाला निर्माण समिति

कंचन संदी, कृष्ण कुमार, ज्वांति संही, दुशदुल विस्तास, मुकेश सालवीय, गर्भका मेनन, शांलिनी शर्मा, तला पाण्डे, स्वांत वर्मी, सारिका वशिष्ण, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लक्षिका भपन

चित्रांकन - निधि वाधवा

खंग्जा संबा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑफ्नेटर - अर्चना गुमा, अंशुल मुच्छ, खेळा पाल

आभार जापन

प्रेकेसर कृष्ण कृष्ण, निरंशक्ष, राष्ट्रीय श्रीक्षक अनुसंधाद और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा काषय, संयुक्त निरंशक, केन्द्रीय श्रीक्षक प्रोधोगिकी संस्थान, राष्ट्रीय श्रीक्षक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर के, के. विराध, विभागाच्यक, प्रारोधक विश्वा विभाग, राष्ट्रीय श्रीक्षक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर गमजम शर्मा, विभाग्वच्यक, पाया विष्यण, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर गमजम शर्मा, विभाग्वच्यक, प्राप्ता मासुर, अध्यक्ष, ग्रीडिंग इंक्लीपमेंट सेल, राष्ट्रीय श्रीक्षक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अश्रोक वाजपेयां, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, ग्रह्मस्या ध्वेधी आंतर्यच्येष हिरी विश्वविद्यासम्ब, वधाः प्रोक्तस्य प्रतिदा, अञ्चुलला, ख्वन, विभागाभ्यक्ष, ग्रीक्षिक अश्र्ययन विभाग, जामिया पितिसा इस्लामिया, दिल्लीः छ, अपूर्णनद, तीहर, हिंदी विभाग, विस्ता विश्यविद्यासम्ब, दिल्लीः छ, रायनम् विम्ता, सी.ई.ओ., आई.एस. एवं एक.एस., मुंबई: सुश्री-नुचरत इसव, विदेशक, नेशनल बुक्त इस्ट. नई दिल्लीः श्री तीहित धनकर, निदेशक, दिसंतर, वयपुर।

क्षा औ. एस. एम. पंपर पर मुद्धित

प्रकारान विभाग में सरिवय, सम्द्रीय बीक्षिक अनुस्थान और प्रतिकरण गरियद, श्री अरविवद गार्ग, नई दिल्ली 110016 क्षण जन्मक्षित तथा पंचाय चिटिया प्रेस, डी-28, इंडाव्हिक्स एरिया, सहस्ट-ए, भेन्द्रेग रहा।स्थ्य द्वारा मुहिता ISBN 978-81-7450-898-0 (बल्का-स्ट) 978-81-7450-883-6

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहाली और दूसरी कथा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देन है। बरखा की कहानियाँ चर स्तरों और पर्धंच सथाधरतुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी चाठक बनने में सदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की खेटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगतों हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधरित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर माजा में किताबें मिले। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी चाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पादबच्चां के हरेक क्षेत्र में संज्ञानत्मक लाभ मिलंगा। शिक्षक बरखा को पादबच्चां के हरेक क्षेत्र में संज्ञानत्मक लाभ मिलंगा। शिक्षक बरखा को पादबच्चां करें।

सर्वोधिकार सुरक्षित

प्रकारक की पूर्वअनुमाँह के जिला हम क्रमांका के किसी भाग की छाला तथा लिक्युणिको मजीकी, फोटोकीर्तियि, क्रिसोटीम अध्या किसी अध्य विधि से मुन: प्रयोग पर्योग हमा उपका मेंक्युण अध्या प्रकारण वर्षित है।

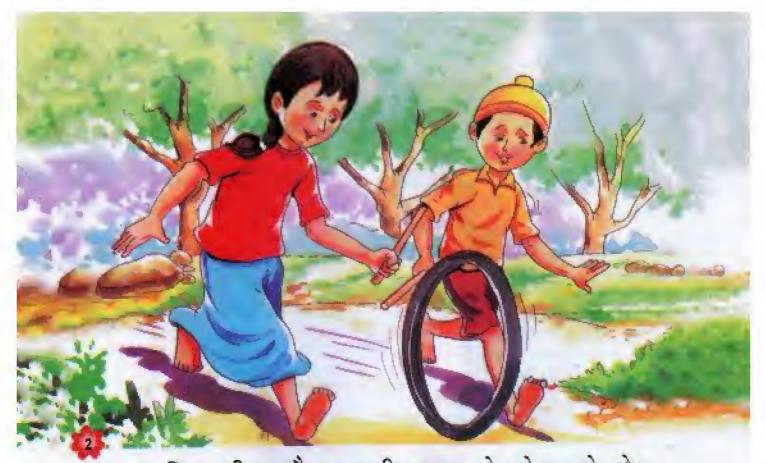
एन में, हैं, अंतर ही, के प्रवदशन कियाम के कार्कशब

- प्यामी,ई अगाडी, वीजस, भी कराँवेद गाएं, पंची फिल्ली 110 016, क्योंग 1 011-2856216.
- 108, 100 फीट एवं, डेनी एक्टरेंशन, डेब्वेकेट, फ्लाकंकरी ||| प्रदेश, बायपुर, 560 085 फॉन : 680-28725740
- नवजीवन इस्ट भवन, क्रक्रमां नवजीवत, अवस्त्रवात ३५० छ।३ फॉन : ७२५-२१६४।४४०
- सी.केस्स्,मी. केन्स्र, त्रिकटः धनकत् कम स्टॉड विस्तरी, कोलकात ३३० ।।4 कोन : 0.03-25559-51
- मंद्रवालयुक्ती, कोम्प्लेकन, महत्तीगाँव, मुख्यको १६। ६२। क्लीन : ६३६१ ३६७४।६६४

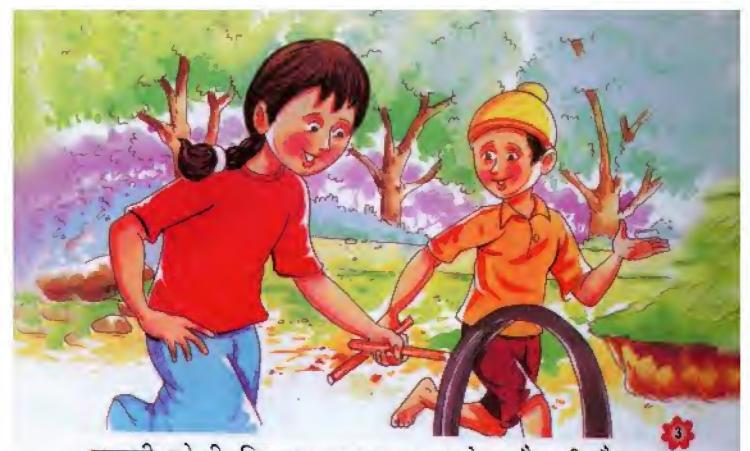
प्रकाशन सहयोग

अध्यक्षः, प्रकाशाः विभागः । गाँः राजाकुमार मुख्य संपद्धमः : त्रजीतः उप्पत्तः पुष्प डायादन अधिकारी : क्रिज कुमा पुष्प ज्याचन अधिकारी : ग्रीतन ग्रीपुनी

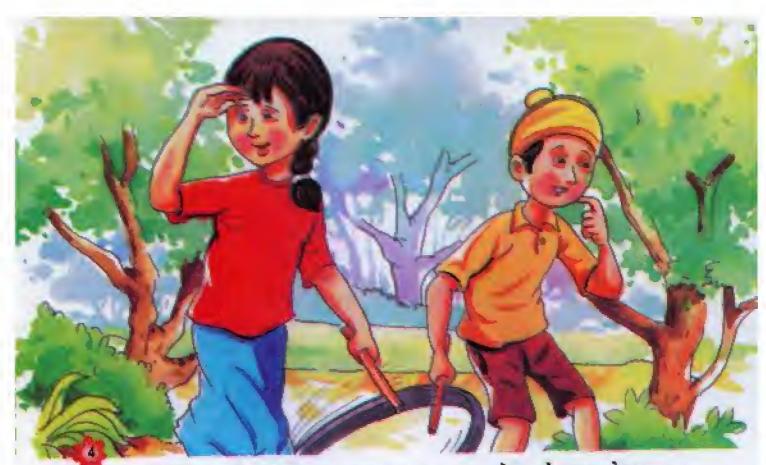




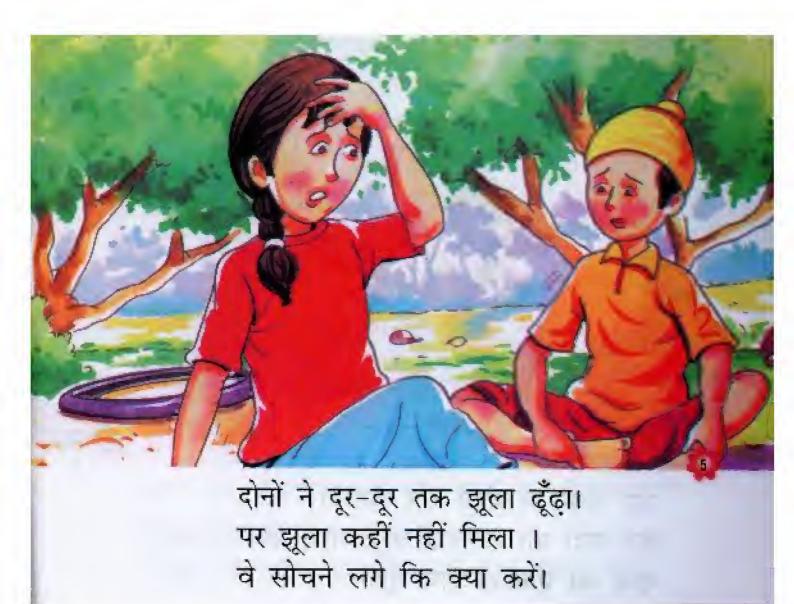
एक दिन जीत और बबली टायर से खेल रहे थे। उनके पास एक काले रंग का चौड़ा-सा टायर था। दोनों अपनी-अपनी डंडी से उसे चला रहे थे।



बबली बोली कि वह टायर बहुत तेज दौड़ाती है। गोल-गोल दौड़ता हुआ टायर कितना अच्छा लगता है। जीत बोला कि उसे तो झूले पर मज़ा आता है।



यह सुनकर बबली का मन झूला झूलने को करने लगा। जीत को भी झूला झूलने की इच्छा हुई। दोनों मिलकर झूला ढूँढ़ने लगे।





उस मैदान में बहुत सारे पेड़ थे। कई पेड़ों की डालियाँ बहुत नीचे आ गई थीं। दोनों को एक तरकीब सूझी।

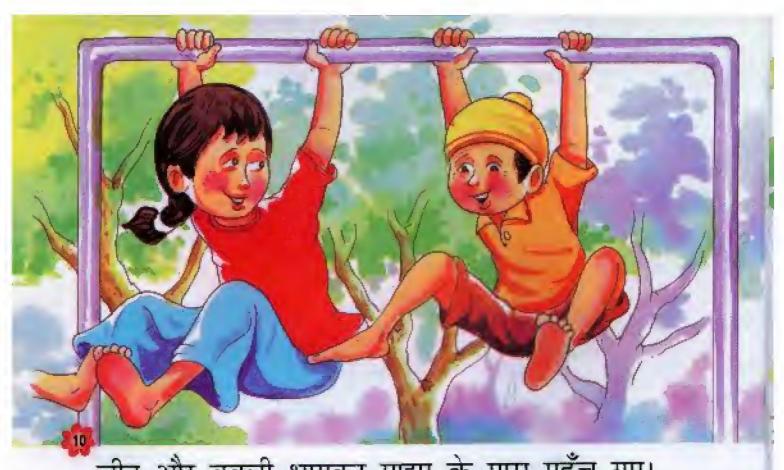


जीत और बबली डाली पर लटक कर झूलने लगे। दोनों को खूब मजा आया। लेकिन वे ज्यादा देर तक नहीं झूल पाए।



बबली के दोनों हाथ छिल गए थे। जीत की हथेलियों में जलन हो रही थी। दोनों हाथ झाड़कर नीचे बैठ गए।





जीत और बबली भागकर पाइप के पास पहुँच गए। दोनों पाइप से लटककर झूलने लगे। दोनों को खूब मजा आया।



लेकिन जीत और बबली ज्यादा देर नहीं झूल पाए। जीत के हाथ में दर्द हो रहा था। बबली भी हाथ पकड़कर बैठ गई।



बबली को एक और तरकीब सूझी। वह बोली कि अपने टायर से झूला बना लेते हैं। उसमें बैठकर झूला झूलेंगे।



जीत को यह बात पसंद आ गई। वह बोला कि वह टायर पेड़ पर लटकाएगा। बबली बोली की वह टायर को लटकाएगी।



बबली ने टायर अपने हाथ में ले लिया। जीत ने उससे टायर छीनने की कोशिश की। दोनों में छीना-झपटी होने लगी।



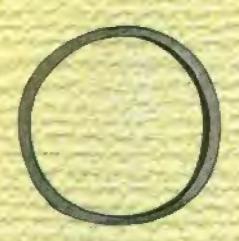
बबली ने टायर खींचा और जोर से हवा में उछाल दिया। टायर काफ़ी दूर तक उछला। उछला हुआ टायर एक पेड़ की डाली पर लटक गया।



जीत दौड़कर टायर के पास पहुँच गया। वह उछलकर टायर में बैठ गया। बबली टायर और जीत को धीरे-धीरे झुलाने लगी।







2082



क, 10,00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING